8763

तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

वर्द्धमान महावीर माता त्रिशला की गोद में

आचार्य श्री कैलास सागर सूरि ज्ञान मन्दिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र,
कोबा, जि. गांधीनगर, पीन-३८२००९

वर्ष : २६ अंक : १
अप्रैल २००२

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

卐

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २६ | अंक - १, अप्रैल | २००२

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007 Phone : 238-2655, e-mail : jbhawan@cal3.vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 238-2655 and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street Kolkata - 700 007 Phone : 241-1006

॥ जैन भवन ॥

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	वैदिकधर्म और जैनधर्म	पं० दलसुख मालवणिया	३
२.	कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनिजी	१७
३.	**पटना का संक्षिप्त विवरण**		२७

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय हीराचन्द दुगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दुगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:
Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

वैदिकधर्म और जैनधर्म

पं० दलसुख मालवणिया

(जैन साहित्य के वृहद इतिहास की भूमिका में से)

वैदिकधर्म और जैनधर्म की तुलना की जाय तो जैनधर्म का वह रूप जो इसके प्राचीन साहित्य से उपलब्ध होता है, वेद से उपलब्ध वैदिकधर्म से अत्यधिक मात्रा में सुसंस्कृत है। वेद के इन्द्रादि देवों का रूप और जैनों के आराध्य का स्वरूप देखा जाय तो वैदिक देव सामान्य मानव से अधिक शक्तिशाली हैं किन्तु वृत्तियों की दृष्टि से हीन ही हैं। मानवसुलभ क्रोध, राग, द्वेष आदि वृत्तियों का वैदिक देवों में साम्राज्य है तो जैनों के आराध्य में इन वृत्तियों का अभाव ही है। वैदिकों के इन देवों की पूज्यता कोई आध्यात्मिक शक्ति के कारण नहीं किन्तु नाना प्रकार से अनुग्रह और निग्रह शक्ति के कारण है जब कि जैनों के आराध्य ऐसी कोई शक्ति के कारण पूज्य नहीं किन्तु वीतरागता के कारण आराध्य हैं। आराधक में वीतराग के प्रति जो आदर है वह उसे उनकी पूजा में प्रेरित करता है जब कि वैदिक देवों का डर आराधक के यज्ञ का कारण है। वैदिकों ने भूदेवों की कल्पना तो की किन्तु वे कालक्रम से स्वार्थी हो गये थे। उनको अपनी पुरोहिताई की रक्षा करनी थी। किन्तु जैनों के भूदेव वीतराग मानव के रूप में कल्पित हैं। उन्हें यज्ञादि करके कमाई का कोई साधन जुटाना नहीं था। धार्मिक कर्मकांड में वैदिकों में यज्ञ मुख्य था जो अधिकांश बिना हिंसा या पशु-वध के पूर्ण नहीं होता था जबकि जैनधर्म में क्रियाकांड तपस्यारूप है—अनशन और ध्यानरूप है जिसमें हिंसा का नाम नहीं है। ये वैदिक यज्ञ देवों को प्रसन्न करने के लिए किये जाते थे जब कि जैनों में अपनी आत्मा के उत्कर्ष के लिए ही धार्मिक अनुष्ठान होते थे। उसमें किसी देव को प्रसन्न करने की बात का कोई स्थान नहीं था। उनके देव तो वीतराग होते थे जो प्रसन्न भी नहीं होते और अप्रसन्न

भी नहीं होते। वे तो केवल अनुकरणीय के रूप में आराध्य थे।

वैदिकों ने नाना प्रकार के इन्द्रादि देवों की कल्पना कर रखी थी जो तीनों लोक में थे और उनका वर्ग मनुष्य वर्ग से भिन्न था और मनुष्य के लिये आराध्य था। किन्तु जैनों ने जो एक वर्ग के रूप में देवों की कल्पना की है वे मानव वर्ग से पृथकवर्ग होते हुए भी उनका वह वर्ग सब मनुष्यों के लिए आराध्य कोटि में नहीं है। मनुष्य देव की पूजा भौतिक उन्नति के लिए भले करे किन्तु आत्मिक उन्नति के लिये तो उससे कोई लाभ नहीं ऐसा मन्तव्य जैनधर्म का है। अतएव ऐसे ही वीतराग मनुष्यों की कल्पना जैनधर्म ने की जो देवों के भी आराध्य हैं। देव भी उस मनुष्य की सेवा करते हैं। सारांश यह है कि देव की नहीं किन्तु मानव की प्रतिष्ठा बढ़ाने में जैनधर्म अग्रसर है।

देव या ईश्वर इस विश्व का निर्माता या नियंता है, ऐसी कल्पना वैदिकों की देखी जाती है। उसके स्थान में जैनों का सिद्धान्त है कि सृष्टि तो अनादि काल से चली आती है, उसका नियंत्रण या सर्जन प्राणियों के कर्म से होता है, किसी अन्य कारण से नहीं। विश्व के मूल में कोई एक ही तत्त्व होना जरूरी है–इस विषय में वैदिक निष्ठा देखी जाय तो विविध प्रकार की है। अर्थात् वह एक तत्त्व क्या है, इस विषय में नाना मत हैं किन्तु ये सभी मत इस बात में तो एकमत हैं कि विश्व के मूल में कोई एक ही तत्त्व था। इस विषय में जैनों का स्पष्ट मन्तव्य है कि विश्व के मूल में कोई एक तत्त्व नहीं किन्तु वह तो नाना तत्त्वों का संमेलन है।

वेद के बाद ब्राह्मणकाल में तो देवों को गौणता प्राप्त हो गई और यज्ञ ही मुख्य बन गये। पुरोहितों ने यज्ञक्रिया का इतना महत्त्व बढ़ाया कि यज्ञ यदि उचित ढंग से हो तो देवता के लिए अनिवार्य हो गया कि वे अपनी इच्छा न होते हुए भी यज्ञ के पराधीन हो गये। एक प्रकार से यह देवों पर मानवों की विजय थी किन्तु इसमें भी दोष यह था कि मानव का एक वर्ग-ब्राह्मणवर्ग ही यज्ञ–विधि को अपने एकाधिपत्य में रखने लग गया था। उस वर्ग की अनिवार्यता इतनी बढ़ा दी गई थी कि उनके बिना और उनके द्वारा

किए गये वैदिक मन्त्रपाठ और विधिविधान के बिना यज्ञ की संपूर्ति हो ही नहीं सकती थी। किन्तु जैनधर्म में इसके विपरीत देखा जाता है। जो भी त्याग-तपस्या का मार्ग अपनावे चाहे वह शूद्र ही क्यों न हो, गुरुपद को प्राप्त कर सकता है और मानवमात्र का सच्चा मार्गदर्शक भी बनता था। शूद्र वेदपाठ कर ही नहीं सकता था किन्तु जैनशास्त्रपाठ में उनके लिए कोई बाधा नहीं थी। धर्ममार्ग में स्त्री और पुरुष का समान अधिकार था, दोनों ही साधना करके मोक्ष पा सकते थे।

वेदाध्ययन में शब्द का महत्त्व था अतएव वेदमन्त्रों के पाठ की सुरक्षा हुई, संस्कृत भाषा को पवित्र माना गया, उसे महत्व मिला। किन्तु जैनों में पद का नहीं, पदार्थ का महत्त्व था। अतएव उनके यहाँ धर्म के मौलिक सिद्धांत की सुरक्षा हुई किन्तु शब्दों की सुरक्षा नहीं हुई। परिणाम स्पष्ट था कि वे संस्कृत को नहीं, किन्तु लोकभाषा प्राकृत को ही महत्व दे सकते थे। प्राकृत अपनी प्रकृति के अनुसार सदैव एकरूप रह ही नहीं सकती थी, वह बदलती ही गई जब कि वैदिक संस्कृत उसी रूप में आज वेदों में उपलब्ध है। उपनिषदों के पहले के काल में वैदिक धर्म में ब्राह्मणों का प्रभुत्व स्पष्टरूप से विदित होता है, जबसे जैनधर्म का इतिहास ज्ञात है तबसे उसमें ब्राह्मण नहीं किन्तु क्षत्रियवर्ग ही नेता माना गया है। उपनिषद काल में वैदिकधर्म में ब्राह्मणों के समक्ष क्षत्रियों ने अपना सिर उठाया है और वह भी विद्या के क्षेत्र में। किन्तु वह विद्या वेद न होकर आत्मविद्या थी और उपनिषदों में आत्मविद्या का ही प्राधान्य हो गया। यह ब्राह्मणवर्ग के ऊपर स्पष्टरूप से क्षत्रियों के प्रभुत्व की सूचना देता है।

वैदिक और जैनधर्म में इस प्रकार का विरोध देखकर आधुनिक पश्चिम के विद्वानों ने प्रारंभ में यह लिखना शुरु किया कि बौद्धधर्म को ही तरह जैनधर्म भी वैदिकधर्म के विरोध के लिए खड़ा हुआ एक क्रान्तिकारी नया धर्म है या वह बौद्धधर्म की एक शाखामात्र है। किन्तु जैसे-जैसे जैनधर्म और बौद्धधर्म के मौलिक साहित्य का विशेष अध्ययन बढ़ा, पश्चिमी विद्वानों ने ही उनका भ्रम दूर किया और अब सुलझे हुए पश्चिमी विद्वान्

और भारतीय विद्वान् भी यह उचित ही मानने लगे है कि जैनधर्म एक स्वतन्त्र धर्म है—वह वैदिक धर्म की शाखा नहीं है। किन्तु हमारे यहाँ के कुछ अधकचरे विद्वान् अभी भी उन पुराने पश्चिमी विद्वानों का अनुसरण करके यह लिख रहे हैं कि जैनधर्म तो वैदिक धर्म की शाखामात्र है या वेदधर्म के विरोध में खड़ा हुआ नया धर्म है। यद्यपि हम प्राचीनता के पक्षपाती नहीं हैं, प्राचीन होनेमात्र से ही जैनधर्म अच्छा नहीं हो जाता किन्तु जो परिस्थिति है उसका यथार्थरूप से निरूपण जरूरी होने से ही यह कह रहे हैं कि जैनधर्म वेद के विरोध में खड़ा होनेवाला नया धर्म नहीं है। अन्य विद्वानों का अनुसरण करके हम यह कहने के लिए बाध्य हैं कि भारत के बाहरी प्रदेश में रहनेवाले आर्य लोग जब भारत में आये तब जिस धर्म से भारत में उनकी टक्कर हुई थी उस धर्म का ही विकसित रूप जैनधर्म है—ऐसा अधिक संभव है। यदि वेद से ही इस धर्म का विकास होता या केवल वैदिकधर्म का विरोध ही करना होता तो जैसे अन्य वैदिकों ने वेद का प्रामाण्य मानकर ही वेदविरोधी बातों का प्रवर्तन कर दिया, जैसे उपनिषद् के ऋषियों ने, वैसे ही जैनधर्म में भी होता किन्तु ऐसा नहीं हुआ है, ये तो नास्तिक ही गिने गये-वेद निदंक ही गिने गये हैं—इन्होंने वेदप्रामाण्य कभी स्वीकृत किया ही नहीं। ऐसी परिस्थिति में उसे वैदिकधर्म की शाखा नहीं गिना जा सकता। सत्य तो यह है कि वेद के माननेवाले आर्य जैसे-जैसे पूर्व की ओर बढ़े हैं वैसे-वैसे वे भौतिकता से दूर हटकर आध्यात्मिकता में अग्रसर होते रहे हैं—ऐसा क्यों हुआ? इसके कारणों की जब खोज की जाती है तब यही फलित होता है कि वे जैसे-जैसे संस्कारी प्रजा के प्रभाव में आये हैं वैसे-वैसे उन्होंने अपना रवैया बदला है—उसी बदलते हुए रवैये की गूँज उपनिषदों की रचना में देखी जा सकती है। उपनिषदों में कई वेद मान्यताओं का विरोध तो है फिर भी वे वेद के अंग बने और वेदान्त कहलाए, यह एक ओर वेद का प्रभाव और दूसरी ओर नई सूझ का समन्वय ही तो है। वेद का अंग बनकर वेदान्त कहलाए और एक तरह से वेद का अन्त भी कर दिया। उपनिषद् बन जाने के बाद दार्शनिकों ने वेद को एक ओर रखकर उपनिषदों के सहारे ही वेद

को प्रतिष्ठा बढ़ानी शुरू की। वेदभक्ति रही किन्तु निष्ठा तो उपनिषद् में ही बढ़ी। एक समय यह भी आया कि वेद की ध्वनिमात्र रह गई अर्थ नदारद हो गया। उसके अर्थ का उद्धार मध्यकाल में हुआ भी तो वह वेदान्त के अर्थ को अग्रसर करके ही हुआ। आधुनिक काल में भी दयानंद जैसों ने भी यह साहस नहीं किया कि वेद के मौलिक हिंसा-प्रधान अर्थ की प्रतिष्ठा करें। वेद के ह्रास का यह कारण पूर्वभारत की प्रजा के संस्कारों में निहित है और जैनधर्म के प्रवर्तक महापुरुष जितने भी हुए हैं वे मुख्यरूप से पूर्वभारत की ही देन हैं। जब हम यह देखते है तो सहज ही अनुमान होता है कि पूर्वभारत का यह धर्म ही जैनधर्म के उदय का कारण हो सकता है जिसने वैदिक धर्म को भी नया रूप दिया और हिंसक तथा भौतिक धर्म को अहिंसा और आध्यात्मिकता का नया पाठ बढ़ाया।

जब तक पश्चिमी विद्वानों ने केवल वेद और वैदिक साहित्य का अध्ययन किया था और जब तक सिंधुसंस्कृति को प्रकाश में लानेवाले खुदाई कार्य नहीं हुए थे तब तक-भारत में जो कुछ संस्कृति है उसका मूल वेद में ही होना चाहिए—ऐसा प्रतिवादन वे करते रहे। किन्तु जब से मोहन-जोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई हुई है तब से पश्चिम के विद्वानों ने अपना मत बदल दिया है और वेद के अलावा वेद से भी बढ़ चढ़कर वेदपूर्वकाल में भारतीय संस्कृति थी इस नतीजे पर पहुँचे हैं। और अब तो उस तथाकथित सिंधुसंस्कृति के अवशेष प्रायः समग्र भारतवर्ष में दिखाई देते हैं—ऐसी परिस्थिति में भारतीय धर्मों के इतिहास को उस नये प्रकाश में देखने का प्रारंभ पश्चिमी और भारतीय विद्वानों ने किया है और कई विद्वान् इस नतीजे पर पहुँचे है कि जैनधर्म वैदिकधर्म से स्वतंत्र है। वह उसकी शाखा नहीं है और न वह केवल उसके विरोध में ही खड़ा हुआ है।

प्राचीन यति—मुनि—श्रमणः— मोहेन-जोदारो में और हड़प्पा में जो खुदाई हुई उसके अवशेषों का अध्ययन करके विद्वानों ने उसकी संस्कृति को सिन्धुसंस्कृति नाम दिया था और खुदाई में सबसे निम्नतर में

मिलने वाले अवशेषों को वैदिक संस्कृति से भी प्राचीन संस्कृति के अवशेष हैं—ऐसा प्रतिपादन किया था। सिन्धुसंस्कृति के समान ही संस्कृति के अवशेष अब तो भारत के कई भागों में मिले हैं—उसे देखते हुए उस प्राचीन संस्कृति का नाम सिंधु संस्कृति अव्याप्त हो जाता है। वैदिक संस्कृति यदि भारत के बाहर से आने वाले आर्यों की संस्कृति है तो सिन्धुसंस्कृति का यथार्थ नाम भारतीय संस्कृति ही हो सकता है।

अनेक स्थलों में होनेवाली खुदाई में जो नाना प्रकार की मोहरें मिली हैं उन पर कोई न कोई लिपि में लिखा हुआ भी मिला है। वह लिपि संभव है कि चित्रलिपि हो। किन्तु दुर्भाग्य है कि उस लिपि का यथार्थ वाचन अभी तक हो नहीं पाया है। ऐसी स्थिति में उसकी भाषा के विषय में कुछ भी कहना संभव नहीं है। और वे लोग अपने धर्म को क्या कहते थे, यह किसी लिखित प्रमाण से जानना संभव नहीं है। किन्तु अन्य जो सामग्री मिली है उस पर से विद्वानों का अनुमान है कि उस प्राचीन भारतीय संस्कृति में योग का अवश्य स्थान था। यह तो हम अच्छी तरह से जानते है कि वैदिक आर्यों में वेद और ब्राह्मणकाल में योग की कोई चर्चा नहीं है। उनमें तो यज्ञ को ही महत्त्व का स्थान मिला हुआ है। दूसरी ओर जैन-बौद्ध में यज्ञ का विरोध था और योग का महत्त्व। ऐसी परिस्थिति में यदि जैनधर्म को तथाकथित सिन्धुसंस्कृति से भी संबद्ध किया जाय तो उचित होगा।

अब प्रश्न यह है कि वेदकाल में उसका नाम क्या रहा होगा? आर्यों ने जिनके साथ युद्ध किया उन्हें दास, दस्यू जैसे नाम दिये हैं। किन्तु उससे हमारा काम नहीं चलता। हमें तो वह शब्द चाहिए जिससे उस संस्कृति का बोध हो। पुरों का नाश करके आर्यों के मुखिया इन्द्र ने पुरन्दर की पदवी को प्राप्त किया। उसी इन्द्र ने यतियों और मुनियों की भी हत्या की है—ऐसा उल्लेख मिलता है (अथर्व० २, ५, ३)। अधिक संभव यही है कि ये मुनि और यति शब्द उन मूल भारत के निवासियों की संस्कृति के सूचक हैं और इन्हीं शब्दों की विशेष प्रतिष्ठा जैन संस्कृति में प्रारंभ से देखी भी जाती है। अतएव

यदि जैनधर्म का पुराना नाम यतिधर्म या मुनिधर्म माना जाय तो इसमें आपत्ति की बात न होगी। यति और मुनिधर्म दीर्घकाल के प्रवाह में बहता हुआ कई शाखा-प्रशाखाओं में विभक्त हो गया था। यही हाल वैदिकों का भी था। प्राचीन जैन और बौद्ध शास्त्रों में धर्मों के विविध प्रवाहों को सूत्रबद्ध करके श्रमण और ब्राह्मण इन दो विभागों में बांटा गया है। इनमें ब्राह्मण तो वे हैं जो वैदिक संस्कृति के अनुयायी हैं और शेष सभी का समावेश श्रमणों में होता था। अतएव इस दृष्टि से हम कह सकते हैं कि भगवान् महावीर और बुद्ध के समय में जैनधर्म का समावेश श्रमणवर्ग में था।

ऋग्वेद (१०. १३६. २) में ***वातरशना मुनि*** का उल्लेख हुआ है जिसका अर्थ है नग्न मुनि। और आरण्यक में जाकर तो श्रमण और वातरशना का एकीकरण भी उल्लिखित है। उपनिषद् में तापस और श्रमणों को एक बताया गया है (बृहदा० ४.३.२२)। इन सबका एक साथ विचार करने पर श्रमणों की तपस्या और योग की प्रवृत्ति ज्ञात होती है। ऋग्वेद के वातरशना मुनि और यति भी ये ही हो सकते हैं। इस दृष्टि से भी जैनधर्म का संबंध श्रमण-परम्परा से सिद्ध होता है और इस श्रमण-परम्परा का विरोध वैदिक या ब्राह्मण-परम्परा से चला आ रहा है, इसकी सिद्धि उक्त वैदिक तथ्य से होती है कि इन्द्र ने यतियों और मुनियों की हत्या की तथा पतंजलि के उस वक्तव्य से भी होती है जिसमें कहा गया है कि श्रमण और ब्राह्मणों का शाश्वतिक विरोध है (पातंजल महाभाष्य ५.४.९)। जैनशास्त्रों में पांच प्रकार के श्रमण गिनाए हैं। उनका बौद्धग्रन्थों में निर्ग्रन्थ नाम से परिचय कराया गया है—इससे इस मत की पुष्टि होती है कि जैन मुनि या यति को भगवान् बुद्ध के समय में निर्ग्रन्थ कहा जाता था और वे श्रमणों के एक वर्ग में थे।

सारांश यह है कि वेदकाल में जैनों के पुरखे मुनि या यति में शामिल थे। उसके बाद उनका समावेश श्रमणों में हुआ और भगवान् महावीर के समय वे निर्ग्रन्थ नाम से विशेषरूप से प्रसिद्ध थे। जैन नाम जैनों की तरह बौद्धों के लिए भी प्रसिद्ध रहा है क्योंकि दोनों में जिन की आराधना समानरूप से होती थी। किन्तु भारत से बौद्धधर्म के प्रायः लोप के बाद

केवल महावीर के अनुयायियों के लिए जैन नाम रह गया जो आज तक चालू है।

तीर्थंकरों की परम्परा:—जैन-परम्परा के अनुसार इस भारतवर्ष में कालचक्र उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी में विभक्त है। प्रत्येक में छः आरे होते हैं। अभी अवसर्पिणी काल चल रहा है। इसके पूर्व उत्सर्पिणी काल था। अवसर्पिणी के समाप्त होने पर पुनः उत्पर्सिणी कालचक्र शुरू होगा इस प्रकार अनादिकाल से यह कालचक्र चल रहा है और अनन्तकाल तक चलेगा। उत्सर्पिणी में सभी भाव उन्नति को प्राप्त होते हैं और अवसर्पिणी में ह्रास को। किन्तु दोनों में तीर्थंकरों का जन्म होता है। उनकी संख्या प्रत्येक में २४ की मानी गई है। तदनुसार प्रस्तुत अवसर्पिणी में अबतक २४ तीर्थंकर हो चुके हैं। अंतिम तीर्थंकर वर्धमान महावीर हुए और प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव। इन दोनों के बीच का अन्तर असंख्य वर्ष है। अर्थात् जैन-परम्परा के अनुसार ऋषभदेव का समय भारतीय ज्ञात इतिहास में नहीं आता। उनके अस्तित्वकाल की यथार्थता सिद्ध करने का हमारे पास कोई साधन नहीं। अतएव हम उन्हें पौराणिक काल के अन्तर्गत ले सकते हैं। उनकी अवधि निश्चित नहीं करते। किन्तु ऋषभदेव का चरित्र जैनपुराणों में वर्णित है और उसमें जो समाज का चित्रण है वह ऐसा है कि उसे हम संस्कृति का उषःकाल कह सकते हैं। उस समाज में राजा नहीं था, लोगों को लिखना-पढ़ना, खेती करना और हथियार चलाना नहीं आता था। समाज में अभी सुसंस्कृत लग्नप्रथा ने प्रवेश नहीं किया था। भाई-बहन पति-पत्नी की तरह व्यवहार करते और संतानोत्पत्ति होती थी। इस समाज को सुसंस्कृत बनाने का प्रारंभ ऋषभदेव ने किया।

यहाँ हमें ऋग्वेद के यम-यमी संवाद की याद आती है। उसमें यमी जो यम की बहन है वह यम के साथ संभोग की इच्छा करती है किन्तु यम ने नहीं माना, और दूसरे पुरुष की तलाश करने को कहा। उससे यह झलक मिलती *है कि भाई-बहन का पति-पत्नी होकर रहना किसी समय समाज में जायज* था किन्तु उस प्रथा के प्रति ऋग्वेद के समय में अरुचि स्पष्ट है। ऋग्वेद का

समाज ऋषभदेवकालीन समाज से आगे बढ़ा हुआ है—इसमें संदेह नहीं है। कृषि आदि का उस समाज में प्रचलन स्पष्ट है। इस दृष्टि से देखा जाय तो ऋषभदेव के समाज का काल ऋग्वेद से भी प्राचीन हो जाता है। कितना प्राचीन, यह कहना संभव नहीं अतएव उसकी चर्चा करना निरर्थक है। जिस प्रकार जैन शास्त्रों में राजपरंपरा की स्थापना की चर्चा है और उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल की व्यवस्था है वैसे ही काल की दृष्टि से उन्नति और ह्रास का चित्र तथा राजपरंपरा की स्थापना का चित्र बौद्ध परम्परा में भी मिलता है। इसके लिए दीघनिकाय के चक्कवत्तिसुत्त (भाग३, पृ०४६(तथा अग्गञ्ञसुत्त (भाग३, पृ० ६३) देखना चाहिए। जैनपरम्परा के कुलकरों की परम्परा में नाभि और उनके पुत्र ऋषभ का जो स्थान है करीब वैसा ही स्थान बौद्धपरम्परा में महासंमत का है (अग्गञ्ञसुत्त-दीघ० का) और सामयिक परिस्थिति भी दोनों में करीब-करीब समानरूप से चित्रित है। संस्कृति के विकास का उसे प्रारम्भ काल कहा जा सकता है। ये सब वर्णन पौराणिक हैं, यही उसकी प्राचीनता में प्रबल प्रमाण माना जा सकता है।

हिन्दू पुराणों में ऋषभचरित ने स्थान पाया है और उनके माता-पिता मरुदेवी और नाभि के नाम भी वही हैं जैसा जैनपरंपरा मानती है और उनके त्याग और तपस्या का भी वही रूप है जैसा जैनपरम्परा में वर्णित है। और आश्चर्य तो यह है कि उनको वेदविरोधी मान कर भी विष्णु के अवताररूप से बुद्ध की तरह माना गया है।[१] यह इस बात का प्रमाण है कि ऋषभ का व्यक्तित्व प्रभावक था और जनता में प्रतिष्ठित भी। ऐसा न होता तो वैदिक परंपरा में तथा पुराणों में उनको विष्णु के अवतार का स्थान मिलता। जैनपरम्परा में तो उनका स्थान प्रथम तीर्थंकर के रूप में निश्चित किया गया है। उनकी साधना का क्रम यज्ञ न होकर तपस्या है—यह इस बात का प्रमाण

---

१. History of Dharmasastra, Vol. V. part II. p, 995; जैन साहित्य का इतिहास —पूर्वपीठिका, पृ० १२०.

है कि वे श्रमण परम्परा से मुख्यरूप से संबद्ध थे। श्रमणपरंपरा में यज्ञ द्वारा देव में नहीं किन्तु अपने कर्म द्वारा अपने में विश्वास मुख्य है।

पं० श्री कैलाशचन्द्र ने शिव और ऋषभ के एकीकरण की जो संभावना प्रकट की है और जैन तथा शैव धर्म का मूल एक परंपरा में खोजने का जो प्रयास किया है[२] वह सर्वमान्य हो या न हो किन्तु इतना तो कहा ही जा सकता है कि ऋषभ का व्यक्तित्व ऐसा था जो वैदिकों को भी आकर्षित करता था और उनकी प्राचीनकाल से ऐसी प्रसिद्धि रही जिसकी उपेक्षा करना संभव नहीं था। अतएव ऋषभचरित ने एक या दूसरे प्रसंग से वेदों से लेकर पुराणों और अंत में श्रीमद्भागवत में भी विशिष्ट अवतारों में स्थान प्राप्त किया है। अतएव डा. जेकोबी ने भी जैनों की इस परम्परा में कि जैनधर्म का प्रारंभ ऋषभदेव से हुआ है– सत्य की संभावना मानी है।[३]

डॉ० राधाकृष्णन् ने यजुर्वेद में ऋषभ, अजितनाथ और अरिष्टनेमि का उल्लेख होने की बात कही है किन्तु डा० शुब्रिंग मानते है कि वैसी कोई सूचना उसमें नहीं है।[४] पं. श्री कैलाशचन्द्र ने[५] डा. राधाकृष्णन् का समर्थन किया है किन्तु इस विषय में निर्णय के लिए अधिक गवेषणा की आवश्यकता है।

एक ऐसी भी मान्यता विद्वानों में प्रचलित है कि जैनों ने अपने २४ तीर्थंकरों की नामावलि की पूर्ति प्राचीनकाल में भारत में प्रसिद्ध उन महापुरुषों के नामों को लेकर की है जो जैनधर्म को अपनानेवाले विभिन्न वर्गों के लोगों में मान्य थे। इस विषय में हम इतना ही कहना चाहते हैं कि ये महापुरुष यज्ञों की –हिंसक यज्ञों की प्रतिष्ठा करनेवाले नहीं थे किन्तु करुणा की और त्याग–तपस्या की तथा आध्यात्मिक साधना की प्रतिष्ठा करनेवाले थे–ऐसा माना जाय तो इसमें आपत्ति की कोई बात नहीं हो सकती।

---

२. जै० सा० इ० पूर्वपीठिका, पृ० १०७

३. देखिये—जै० सा० इ० पू०, पृ० ५

४. डॉक्ट्रिन ऑफ दी जैन्स, पृ० २७, टि. २.

५. जै० सा० इ० पू०, पृ० १०८,

जैनपरम्परा में ऋषभ से लेकर भगवान् महावीर तक २४ तीर्थंकर माने जाते हैं उनमें से कुछ ही का निर्देश जैनेतर शास्त्रों में है। तीर्थकरों की जो कथाएँ जैनपुराणों में दी गई हैं उनमें ऐसी कथाएँ भी हैं जो अन्यत्र भी प्रसिद्ध हैं, किन्तु नामान्तरों से। अतएव उनपर विशेष विचार न करके यहाँ उन्हीं तीर्थंकरों पर विशेष विचार करना है जिनका नामसाम्य अन्यत्र उपलब्ध है या जिनके विषय में बिना नाम के भी निश्चित प्रमाण मिल सकते हैं।

बौद्ध अंगुत्तरनिकाय में पूर्वकाल में होनेवाले सात शास्ता वीतराग तीर्थकरों की बात भगवान् बुद्ध ने कही है—**भूतपुप्वं भिक्खवे सुनेत्तो नाम सत्था अहोसि तित्थकरो कामेसु वीतरागो—भुगपक्ख—-अरनेमि—कुद्दालक—हत्थिपाल—जोतिपाल—अरको नाम सत्था अहोसि तित्थकरो कामेसु वीतरागो। अरकस्म खो पन, भिक्खवे, सत्थुनो अनेकानि सावकसतानि अहेसुं** (भाग ३. पृ० २५६-२५६) ।

इसी प्रसंग में अरकसुत्त में अरक का उपदेश कैसा था, यह भी भगवान् बुद्ध ने वर्णित किया है। उनका उपदेश था कि **अप्पकं जीवितं मनुस्सानं परित्तं, लहुकं बहुदुक्खं बहुपायासं मन्तयं बोद्धव्वं, कत्तब्बं कुसलं, चरितब्बं ब्रह्मचरियं, नत्थि जातस्स अमरणं** (पृ० २५७)।और मनुष्यजीवन की इस नश्वरता के लिए उपमा दी है कि सूर्य के निकलने पर जैसे तृणाग्र में स्थित (घास आदि पर पड़ा) ओसबिन्दु तत्काल विनष्ट हो जाता है वैसे ही मनुष्य का यह जीवन भी शीघ्र मरणाधीन होता है। इस प्रकार इस ओसबिन्दु की उपमा के अलावा पानी के बुद्बुद और पानी में दंडराजी आदि का भी उदाहरण देकर जीवन की क्षणिकता बताई गई है (पृ० २५८)।

अरक के इस उपदेश के साथ उत्तराध्ययनगत **समयं गोयम मा पमायए** उपदेश तुलनीय है (उत्तरा. अ. १०)। उसमें भी जीवन की क्षणिकता के ऊपर भार दिया गया है और अप्रमादी बनने को कहा गया है। उसमें भी कहा है—

कुसग्गे जह ओसबिन्दुए थोवं चिट्ठइ लंबमाणए।
एवं मणुयाण जीवियं समयं गोयम मा पमायए।।

अरक के समय के विषय में भगवान् बुद्ध ने कहा है कि अरक तीर्थंकर के समय में मनुष्यों की आयु ६० हजार वर्ष की होती थी, ५०० वर्ष की कुमारिका पति के योग्य मानी जाती थी। उस समय के मनुष्यों को केवल छः प्रकार की पीड़ा होती थी--शीत, उष्ण, भूख, तृष्णा, पेशाब करना और मलोत्सर्ग करना। इनके अलावा कोई रोगादि की पीड़ा न होती थी। इतनी बड़ी आयु और इतनी कम पीड़ा फिर भी अरक का उपदेश जीवन की नश्वरता का और जीवन में बहुदुःख का था।

भगवान् बुद्ध द्वारा वर्णित इस अरक तीर्थंकर की बात का अठारहवें जैन तीर्थंकर अर के साथ कुछ मेल बैठ सकता है या नहीं, यह विचारणीय है। जैनशास्त्रों के आधार से अर की आयु ८४००० वर्ष मानी गई है और उनके बाद होनेवाली मल्ली तीर्थंकर की आयु ५५ हजार वर्ष है। अतएव पौराणिक दृष्टि से विचार किया जाय तो अरक का समय अर और मल्ली के बीच ठहरता है। इस आयु के भेद को न माना जाय तो इतना कहा ही जा सकता है कि अर या अरक नामक कोई महान् व्यक्ति प्राचीन पुराणकाल में हुआ था जिन्हें बौद्ध और जैन दोनों ने तीर्थंकर का पद दिया है। दूसरी बात यह भी ध्यान देने योग्य है कि इस अरक से भी पहले बुद्ध के मत से अरनेमि नामक एक तीर्थंकर हुए हैं। बुद्ध के बताये गये अरनेमि और जैन तीर्थंकर अर का भी कुछ संबंध हो सकता है। नामसाम्य आंशिक रूप से है ही और दोनों की पौराणिकता भी मान्य है।

बौद्ध थेरगाथा में एक अजित थेर के नाम से गाथा है—

मरणे में भयं नत्थि निकन्ति नत्थि जीविते।
सन्देहं निक्खिपिस्सामि सम्पजानो पटिस्सतो।।

(थेर गाथा १.२०)

उसकी अट्ठकथा में कहा गया है कि ये अजित ९१ कल्प के पहले प्रत्येकबुद्ध हो गये हैं। जैनों के दूसरे तीर्थंकर अजित और ये प्रत्येकबुद्ध अजित योग्यता और नाम के अलावा पौराणिकता में भी साम्य रखते हैं। महाभारत में अजित और शिव का ऐक्य वर्णित है। बौद्धों के, महाभारत के और जैनों के अजित एक हैं या भिन्न, यह कहना कठिन है किन्तु इतना तो कहा ही जा सकता है कि अजित नामक व्यक्ति ने प्राचीनकाल में प्रतिष्ठा पाई थी।

बौद्धपिटक में निग्गन्थ नातपुत्त का कई बार नाम आता है और उनके उपदेश की कई बातें ऐसी हैं जिससे निगन्थ नातपुत्त की ज्ञातपुत्र भगवान् महावीर से अभिन्नता सिद्ध होती है। इस विषय में सर्वप्रथम डा० जेकोबी ने विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया था और अब तो यह बात सर्वमान्य हो गई है। डॉ. जेकोबी ने बौद्धपिटक से ही भगवान् पार्श्वनाथ के अस्तित्व को भी साबित किया है। भगवान् महावीर के उपदेशों में बौद्धपिटकों में बारबार उल्लेख आता है कि उन्होंने चातुर्याम का उपदेश दिया है। डॉ. जेकोबी ने इस परसे अनुमान लगाया है कि बुद्ध के समय में चतुर्याम का पार्श्वनाथ द्वारा दिया उपदेश जैसा कि स्वयं जैनधर्म की परम्परा में माना गया है, प्रचलित था। भगवान् महावीर ने उस चतुर्याम के स्थान में पाँच महाव्रत का उपदेश दिया था। इस बात को बुद्ध जानते न थे। अतएव जो पार्श्वका उपदेश था उसे महावीर का उपदेश कहा गया। बौद्धपिटक के इस गलत उल्लेख से जैन परम्परा को मान्य पार्श्व और उनके उपदेश का अस्तित्व सिद्ध हो जाता है। इस प्रकार बौद्धपिटक से हम पार्श्वनाथ के अस्तित्व के विषय में प्रबल प्रमाण पाते हैं।

सोरेन्सन ने महाभारत के विशेषनामों का कोष बनाया है। उसके देखने से पता चलता है कि सुपार्श्व, चन्द्र और सुमति ये तीन नाम ऐसे हैं जो तीर्थंकरों के नामों से साम्य रखते हैं। विशेष बात यह भी ध्यान देने की है कि ये तीनों ही असुर हैं। और यह भी हम जानते हैं कि पौराणिक मान्यता

के अनुसार अर्हंतों ने जो जैनधर्म का उपदेश दिया है वह विशेषतः असुरों के लिए था। अर्थात् वैदिक पौराणिक मान्यता के अनुसार जैनधर्म असुरों का धर्म है। ईश्वर के अवतारों में जिस प्रकार ऋषभ को अवतार माना गया है उसी प्रकार सुपार्श्व को महाभारत में कुपथ नामक असुर के लिए कहा गया है कि वरुणप्रासाद में उनका स्थान दैत्यों और दानवों में था। तथा एक अन्य सुमति नाम के ऋषि का भी महाभारत में उल्लेख है जो भीष्म के समकालीन बताए गए हैं।

जिस प्रकार भागवत में ऋषभ को विष्णु का अवतार माना गया है उसी प्रकार अवतार के रूप में तो नहीं किन्तु विष्णु और शिव के जो सहस्रनाम महाभारत में दिये गये हैं उनमें श्रेयस, अनन्त, धर्म, शान्ति और संभव —ये नाम विष्णु के भी हैं और ऐसे ही नाम जैन तीर्थंकरों के भी मिलते हैं। सहस्रनामों के अभ्यास से यह पता चलता है कि पौराणिक महापुरुषों का अभेद विष्णु से और शिव से करना—यह भी उसका एक प्रयोजन था। प्रस्तुत में इन नामों से जैन तीर्थंकर अभिप्रेत हैं या नहीं, यह विचारणीय है। शिव के नामों में भी अनन्त, धर्म, अजित, ऋषभ—ये नाम आते हैं जो तत्तत् तीर्थंकरों के नाम भी हैं।

शान्ति विष्णु का भी नाम है, यह कहा ही गया है। महाभारत के अनुसार उस नाम के एक इन्द्र और ऋषि भी हुए हैं। इनका संबन्ध शान्ति नामक जैन तीर्थंकर से है या नहीं, यह विचारणीय है। बीसवें तीर्थंकर के नाम मुनिसुव्रत में मुनि को सुव्रत का विशेषण माना जाय तो सुव्रत नाम ठहरता है। महाभारत में विष्णु और शिव का भी एक नाम सुव्रत मिलता है। नामसाम्य के अलावा जो इन महापुरुषों का संबंध असुरों से जोड़ा जाता है वह इस बात के लिए तो प्रमाण बनता ही है कि ये वेदविरोधी थे। उनका वेदविरोधी होना उनके श्रमणपरंपरा से संबद्ध होने की संभावना को दृढ़ करता है।

कर्म की कहानी

पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी

सजातीय और विजातीय काम से व्यक्ति समय से पूर्व ही वृद्ध हो जाते है। खान-पान भी अखाद्य होने के कारण शरीर में अनेक रोग अपना घर बना लेते है।

घर के संरक्षक को भी युवा वर्ग पर विशेष ध्यान देना चाहिए। कहीं आपके बच्चे कुसंग में आकर आपसे झूठ बोलकर गलत कार्यों में लिप्त रहकर आपकी इच्छाओं को धूमिल न कर दें। आप उनकी प्रत्येक गति विधिपर नजर रखे। भावी पीढ़ी के विकास में अवरोध न डाले पर साथ-साथ में यह भी ध्यान रखे कि विकास मार्ग अवरुद्ध न हो जाय। कहीं बच्चे नासमझ की अवस्था में गलत राह न पकड़ ले।

इसके लिए आप अपना खान-पान निवास स्थान, मित्र का चयन भी योग्य रूप से करें। ऐसी शिक्षण संस्था में बच्चे को पढ़ाये कि जहाँ भारतीय संस्कृतिकी की शिक्षा मिलती रहे।

फैशन व्यसन त्याग करे — भारतीय संस्कृति के विरुद्ध वेश का त्याग करे। मदिरा, मांस, जुआ, शिकार, परस्त्री, वैश्या और चोरी ये सात व्यसन है। इस सात व्यसनों को कभी भी जीवन में प्रवेश करने न देवे। त्याज्य पदार्थ का सेवन भी जीवन में अहितकर है।

आज देश में गरीबी, बेकारी बीमारी, गुण्डागिरी दावानल जैसा फैल रहा है। ऐसी स्थिति में धनी व्यक्ति अपने धन का प्रदर्शन करके गरीबों का मजाक करते है।

जहाँ मानव, मानव के लिए काम नहीं आते है, वहाँ संसार सुखमय बन नहीं सकता है। प्रश्न हो सकता है कि फिर धनी व्यक्ति भी गरीब बन कर जीवन जीये ?

नहीं - ! ऐसी बात नहीं है, वे धनी व्यक्ति खूब आनन्द से जीवन व्यतीत करें, पर पड़ोस में रहने वाले गरीब भाई का भी ध्यान रखें। उनके लिए भी कुछ त्याग करें।

आज विज्ञान नये-नये संशोधन करके मनुष्य को अधिक अतृप्त और गरीब बना रहा है।

आज विकासशील व विकसित देश अधिक दुःखी है। वहाँ अधिक हत्या और आत्महत्या की घटनाये घटती है। आज वहाँ की प्रजा भारतीय प्राचीन संस्कृति का अनुसरण करने लगी है।

हिंसक कार्य न करे — हिंसक कार्य समाज की अद्योगति का कारण है। मानव मन को भ्रष्ट करने का हथियार है। जब सम्पूर्ण अहिंसक जीवन निर्वाह के लिए हम असमर्थ है तो कम से कम हिंसा की प्रवृत्ति दूर करनी चाहिए। वह हिंसा सबसे बड़ी हिंसा है, जिसमें मानव के मन को दूषित किया जाता है। प्रत्यक्ष न भी अप्रत्यक्षरूप में आज शिक्षित समाज मानव संस्कृति की हत्या कर रहे है। काम से भी अर्थ को अधम माना गया है। काम तो कुछ क्षण के लिए तृप्त करता है पर अर्थ तो तृष्णा को अधिक बढ़ाती है।

धन और नख को शास्त्र में समान मानते है। दोनों ही एक सीमा तक शोभा कारक है। सीमा पार करने पर दुःखदायी माना गया है। आमदनी के अनुरूप ही धन को खर्च कर देना चाहिए।

होटल का भोजन त्याग — होटल के खाद्य सामग्री में अधिकतर अखाद्य का ही प्रयोग होता है। होटल के भोजन में मांसाहार का प्राधान्य होता है। हर खाद्य पदार्थ में आज किसी न किसी रूप में प्राणीज तत्व प्रयोग होता है। बिस्किट, पीपरमिन्ट, चाकलेट, टुथपेस्ट, केक, ब्रेड, आदि में अण्डे, मछली का पाउडर, चरबी, सुअर का मांस, गाय का मांस आदि का प्रयोग किया जाता है। आज बाजार में विकास के नाम पर तैयार भोजन मिल रहा है, जो अभक्ष्य होता है।

बाजार का बेबीफूड खिलाकर माता स्तनकैन्सर को आमन्त्रण दे रही है। खाद्य सामग्री में भेल-सेल को मिटाने के लिए सरकार के खाद्य सम्बन्धित विभिन्न विभाग में भी चर्चा करने की आवश्यकता है। आज सरकार दुष्ट व्यक्ति के मार्गदर्शन पर मांसाहार, अभक्ष्य खाद्य सामग्री का अधिक प्रचार प्रसार कर रही है। अण्डा को शाकाहारी के रूप में प्रचार करना इसका एक ज्वलन्त प्रमाण है। आज ऐसी ही अगर प्रचार-प्रसार की गति रही तो कुछ समय के बाद बाजार में निरामिष वस्तु मिलना मुश्किल हो जायेगा।

अन्तर्जातीय विवाह त्याग — अन्तर्जातीय विवाह संस्कृति को नष्ट करने के लिए महत्वपूर्ण शस्त्र है। इससे समाज का मूल पाया ही अस्थिर हो रहा है। आज शिक्षा और संस्कार के नाम पर इसका जोर शोर से प्रचार हो रहा है। इस प्रकार की विवाह प्रक्रिया से समाज में भविष्य में बहुत ही बड़ा नुकसान होने की संभावना है। एक घर में दो समाज की मिश्रण संस्कृति होने से दोनों संस्कृति बचने की स्थिति में नहीं रह सकती है। आप को याद दिलाते है कि आज भी ब्रिटेन के राजवंश में अन्य कोई भी समाज में विवाह आदि सम्बन्ध निषेध हैं। जिस दिन इस परिवार में इस नियम का उलंघन किया जायेगा उस दिन यह वंश ही नष्ट हो जायेगा। मात्र धन, रूप, या अन्य कोई गुण से आकर्षित होकर अन्य संस्कृति से पले व्यक्ति से विवाह करना हितावह नहीं है।

विवाह एक सामाजिक नियम है। यह कोई धर्म-कर्म नहीं है, कि पापपुण्य का फल किसने देखा है यह कर इसकी उपेक्षा की जाय। इस कर्म का फल तो हर व्यक्ति को इसी जीवन में मिलता है। आज वैज्ञानिक भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि जिस वंश में मांसाहार का प्रचलन नहीं है अर्थात जो निरामिषी समाज है, वह अगर मांसाहार समाज के साथ वैवाहिक सम्बन्ध करे या स्वयं मांसाहार करे तो उसकी आने वाली तीसरी पीढ़ी में अवश्य ही कुष्ठ रोग होता है।

हर व्यक्ति को सामाजिक नियमों का चुस्तरूप में पालन करने का आग्रह रखना चाहिए।

जड़ और चेतन— इस दृश्यमान संसार का निर्माण जड़ और चेतन के मिलन से हुआ है। चेतनयुक्त पदार्थ को पुरुष और चेतन हीन पदार्थ को प्रकृति की संज्ञा दी गई है। सामान्य भाषा में इस संसार को पुरुष और प्रकृति का संयोग माना गया है।

जीव - पुरुष।

जड़ - प्रकृति।

इन दो द्रव्य की ही विविधता संसार में भरी पड़ी हैं। इन दो को अगर हम संसार से निकाल दे, तो इस संसार में कुछ भी अवशेष नहीं बचेगा।

चेतन (जीव) — चेतनशील पदार्थ को जीव कहते है। जो सुख-दुःख अनुभव करे। जिसमें संवेदन शीलता हो उसे जीव कहते है। प्राण धारण करने के कारण जीव को प्राणी भी कहते है।

प्राण दो प्रकार के है— द्रव्य-प्राण, भाव-प्राण।

द्रव्यप्राण— जो पौद्गलिक शरीर के आधारित है, उसे द्रव्य प्राण कहते है। द्रव्य प्राण दश प्रकार है। पाँच इन्द्रीय (स्पर्श, रस, ध्राण, लक्षु, कर्म) तीनबल (मनबल, वचनबल, कायबल) श्वासोश्वास और आयुष्य।

भावप्राण— जो प्राण के आधारित है। उससे भाव प्राण कहते है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि आत्मिक गुण भाव प्राण है।

जड़— उपरोक्त चेतन गुण के विपरीत लक्षण युक्त पदार्थ को जड़ कहते है। इसे पुद्गल भी कहते है। पुद्गल का स्वभाव है हर क्षण बदलते रहना। पुद्गल का शाब्दिक अर्थ है। पुद्—बनना, नया तैयार होना।

गल— नष्ट होना समाप्त होना।

द्रव्य प्राण व जड़ का सम्बन्ध विच्छेद की क्रिया को मृत्यु कहते है। जन्म मृत्यु से पूर्ण मुक्ति पाने के लिये हमें द्रव्यप्राणों से मुक्त होना होगा।

जीव के भेद —

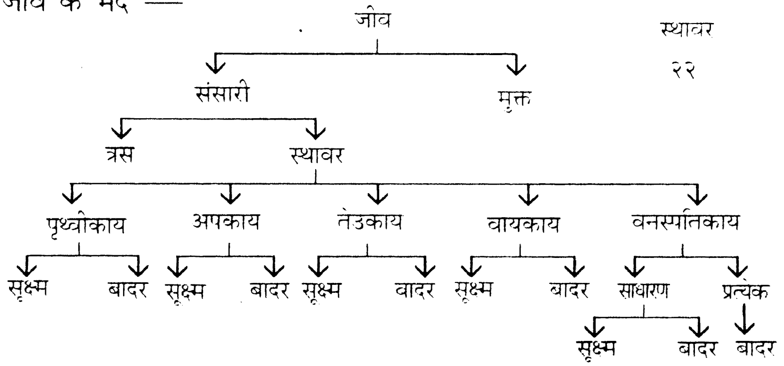

ये सभी सूक्ष्म और बादर जीव, पर्याप्त और अपर्याप्त लेकर स्थावर जीव के कुल २२ भेद है।

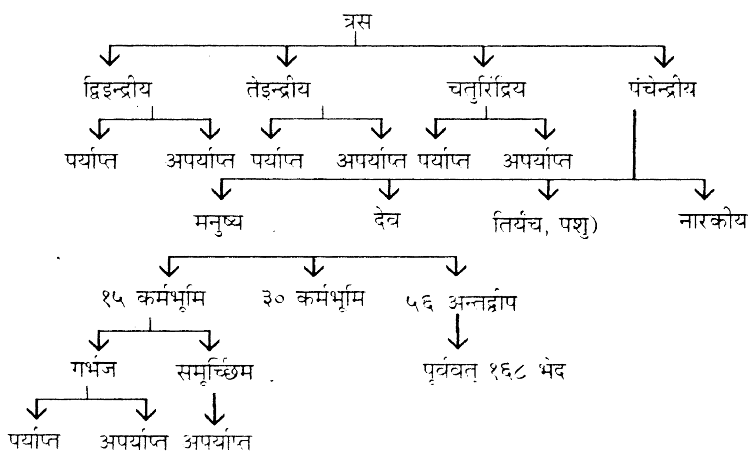

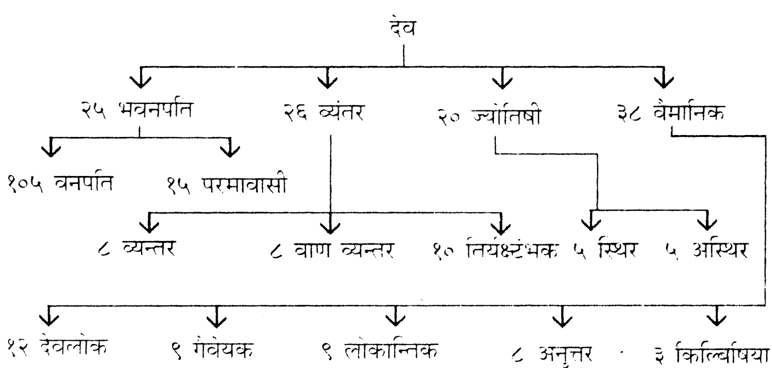

इन सबको पर्याप्त और अपर्याप्त समझे

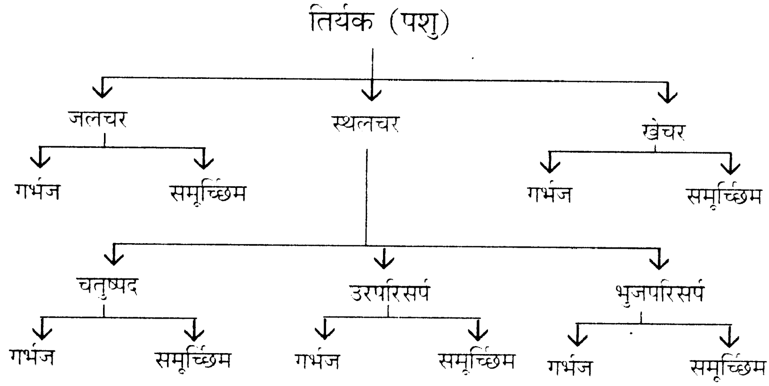

इन सभी के पर्याप्त और अपर्याप्त भेद है।

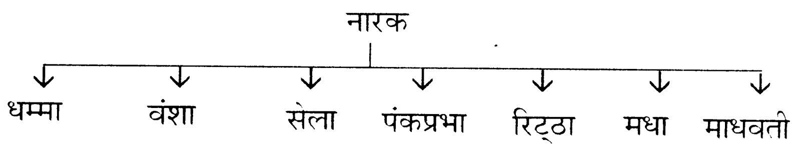

इन सभी का पर्याप्त और अपर्याप्त भेद है।

स्थावर (एकेन्द्रीय)	२२
विकलेन्द्रीय (द्वीन्द्रीय)	०२
विकलेन्द्रीय (त्रिइन्द्रिय)	०२
विकलेन्द्रीय (चतुरिन्द्रिय)	०२
तिर्यंच (पंचेन्द्रिय)	२०
मनुष्य (पंचेन्द्रिय)	३०३
देव (पंचेन्द्रिय)	१९८
नारक (पंचेन्द्रिय)	१४

संसारी — जो जीवात्मा के साथ अष्ट कर्म लगा हुआ है। जन्म मृत्यु बाकी है, सुख, दुःख का अनुभव कर रहा है उसे संसारी जीव कहते है।

मुक्तजीव — जो जीवात्मा के साथ अष्ट कर्म का सम्बन्ध समाप्त हो गया है। जन्म, मृत्यु से मुक्त हो गये है, मात्र अनन्त सुख की अनुभूति है उसे मुक्त जीव कहते है।

स्थावर — जो जीव अपनी इच्छानुसार सुख-दुःख का अनुभव करते हुए एक स्थान से अन्य स्थान में न जा सके उसे स्थावर जीव कहते है। जैसे-माटी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति आदि (आज के वैज्ञानिक सर जगदीश चन्द्र बसु ने भी इन सभी में जीवतत्त्व को स्वीकार किया है।)

त्रस — जो जीव अपनी इच्छानुसार सुख-दुःख का अनुभव करते हुए एक स्थान से अन्य स्थान में जा सके, उसे त्रस जीव कहते है।

बादर — एक या एक से अधिक जीव एक साथ होने पर जो जीव चर्म चक्षु से दृश्यमान हो, उसे बादर जीव कहते है।

सूक्ष्म — एक या एक से अधिक जीव एकत्र होने पर भी जो चर्मचक्षु से दृश्यमान न हो उसे सूक्ष्म जीव कहते है। जैसे–हवा सर्वज्ञ है, पर चर्म चक्षु से देख नहीं सकते है वैसा ही इस संसार में सर्वत्र जीव भरा हुआ है, पर सभी को हम देख नहीं सकते है।

स्थावर जीव एक इन्द्रिय वाला (स्पर्शन्दीय युक्त) होता है। इनके मुख्य छः भेद है और कुल २२ भेद है।

१) पृथ्वीकाय — (४ भेद) माटी, नमक, हीरा, मोती, सोनादि धातु, पारद, पत्थर, रत्न आदि वे सभी पृथ्वीकाय का जीव है। सोनादि का आभूषण मृत शरीर का एक रूपान्तरण हैं। इस पृथ्वीकाय के सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त और अपर्याप्त भेद से चार भेद है।

२) अपकाय (जल) — (४ भेद) समुद्र, सरोवर, नदी, कुआँ, बर्फ, ओंस आदि पानी का प्रकार है। पानी का भी सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त और अपर्याप्त भेद से चार है।

३) तेउकाय (अग्नि) — ज्वालामुखी, विद्युत, लकड़ी, कोयले की अग्नि आदि अग्नि का भेद है। वे भी उपरोक्त प्रकार भेद से चार प्रकार है।

४) वायुकाय (भेद ४) — विभिन्न प्रकार का बहता हुआ या स्थिर वायु आदि। वे वायु उपरोक्त भेद से चार प्रकार है।

५) वनस्पति काय (भेद ६) — वृक्ष, फल, फूल, पत्ते, अनाज, साक, शब्जी आदि वनस्पति के भेद है।

वनस्पति के मुख्य दो भेद है।

(क) प्रत्येक वनस्पति काय — जिस वनस्पति के एक शरीर में एक जीव होता है, उससे प्रत्येक वनस्पति कहते है। जैसे – आम, गेहूं, मुंग आदि। इनके पर्याप्त और अपर्याप्त दो भेद है।

(ख) साधारण वनस्पति काय — जिस वनस्पति के एक शरीर में अनेक जीव होता है। उसे साधारण वनस्पति काय कहते हैं। जैसे - आलू, प्याज आदि जमीनकन्द। इनके सूक्ष्म बादर, पर्याप्त और अपर्याप्त भेद से चार भेद है।

पृथ्वीकाय —

सूक्ष्म पर्याप्त पृथ्वीकाय ———————— ४

सूक्ष्म अपर्याप्त पृथ्वीकाय

बादर पर्याप्त पृथ्वीकाय

बादर अपर्याप्त पृथ्वीकाय

अपकाय — (जल) ———————— ४

सूक्ष्म पर्याप्त अपकाय, सूक्ष्म अपर्याप्त अपकाय,

बादर पर्याप्त अपकाय, बादर अपर्याप्त अपकाय

तेऊकाय (अग्नि) ———————— ४

सूक्ष्म पर्याप्त तेउकाय, सूक्ष्म अपर्याप्त तेउकाय

बादर पर्याप्त तेउकाय, बादर अपर्याप्त तेउकाय

वायुकाय ———————— ४

सूक्ष्म पर्याप्त वायुकाय, सूक्ष्म अपर्याप्त वायुकाय

बादर पर्याप्त वायुकाय, बादर अपर्याप्त वायुकाय

बनर्स्पतिकाय ———————————— ६

बादर पर्याप्त प्रत्येक वनस्पतिकाय

बादर अपर्याप्त प्रत्येक वनस्पतिकाय

बादर पर्याप्त साधारण वनर्स्पतिकाय

बादर अपर्याप्त साधारण वनर्स्पतिकाय

सूक्ष्म पर्याप्त साधारण वनर्स्पतिकाय

सूक्ष्म अपर्याप्त साधारण वनर्स्पतिकाय

स्थावरजीव —— कुल २२ प्रकार

स्थावरजीव एकेन्द्रीय (स्पर्शेन्द्रीय) युक्त होता है।

पाठक को यहाँ संदेह होगा कि उक्त कोई भी पदार्थ में जीव का लक्षण तो दिखता ही नहीं है, फिर वे सब जीव कैसे कहलाते हैं?

उत्तर – इन एकेन्द्रीय स्थावर जीवों में जीवनशक्ति सुषुप्त होती है। सामान्य दृष्टि से इस शक्ति की गतिविधि देखना संभव नहीं हैं, पर विशेष प्रयोग से इनकी जीवन शक्ति की गतिविधि स्पष्टरूप से हम देख सकते है। आज के भौतिक वैज्ञानिक अपनी प्रयोगशाला में प्रमाण कर चुके है कि इन निर्जीव जैसे दिखते जीवों में भी हम जैसी ही संवेदनशीलता है। जीवजीवस्य भक्षणं – जीव विभिन्न प्रकार के जीवों का कलेवर का भक्षण करके ही जीवन धारण करने में समर्थ है। इसके बिना वे जीव जीवित नहीं रह सकते है।

जैसे — अग्नि वायु बिना जीवित नहीं रह सकती है। वायु जल बिना, पृथ्वी तेज बिना, वनस्पति पृथ्वी, तेज, जल आदि से ही विकसित होती है। वनस्पतिकाय तो मनुष्य जैसा ही संवेदनशील प्राणी है। यह बात आज के आधुनिक वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बोस प्रमाणित कर चुके है। इस विषय में लाखों वर्ष पूर्व परमज्ञानी तीर्थंकर परमात्मा कह चुके है। वनस्पतिकाय जीव में हर्ष, शोक, सुख, दुःख, क्रोध, अपनी अवस्था की क्रिया आदि का लक्षण पाया जाता है।

हमारे जीवन के आस-पास कुछ अनुभव सिद्ध उदाहरण——

(क) लज्जावती को स्पर्श करते ही मुर्झा जाती है।

(ख) विकासशील फल, फूल को स्पर्श करते ही उसका विकास रुक जाता है। शायद इसीलिये आज भी एक लौकिक प्रचलित प्रथा है कि किसी भी नवपल्लवित फल, फूल, लता को अंगुली न बताना, अनुमान है कि कोई उसे स्पर्श न कर दे, इसलिए अंगुली बताना ही पाप है, ऐसा प्रचलित है।

(ग) जड़ में हड्डी आदि मिलने पर फल कड़वा हो जाता है।

(घ) वनस्पति के जड़ में पत्थर मिलने पर उसका विकास रुक जाता है।

(ङ) व्यक्ति विशेष द्वारा विशेष वृक्ष लगाने पर अधिक फलद होता है।

(च) वृक्ष मौसम के अनुरूप ही फल देते है।

(छ) अफ्रीका में एक ऐसा छात्राकार वृक्ष है जो किसी भी जीव को अपने पत्तों में समेट कर उसका सम्पूर्ण रक्त चूस लेने के बाद फिर फैलकर उसे छोड़ देता है। ऐसे अनेक प्रमाणों से वनस्पति आदि में जीव तत्त्व प्रमाणित होता है।

क्रमशः

पटना का संक्षिप्त विवरण।

मगध देश का शिरोभूषण पटना नामका नगर बिहार प्रान्त में भागीरथी नदी के दक्षिण तटपर अवस्थित है। प्राचीन काल में यह नगर बहुत विस्तृत और अत्यन्त ऐश्वर्यशाली था। कवियों की वर्णना से मालूम होता है, कि किसी समय यह नगर बहुमूल्य रत्नांकित भव्य भवनों, लोचन-लोभनीय उद्यानों, विमानोपमीय देवमन्दिरों तथा चैत्यालयों से विभूषित इन्द्रपुरी अमरावती एवं कुबेरपुरी अलका को भी मात कर रहा था।

यहाँ के निवासी रोग-शोक, दुःख-दारिद्र, भय और बाधा से रहित थे एवं सदा लोकातिशायी-स्वर्गीय सुखों का उपभोग करते थे। इसी नगर में ब्रह्मचारी-कुलावतंश असिधारा-व्रत-पालक महात्मा स्वामी स्थूलभद्रजीका जन्म तथा महामान्य सुदर्शन सेठ को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ था। अतएव यह नगर जैनियों के लिये परम पवित्र तीर्थ स्थान है ही; किन्तु जैनेत्तर वैदिक बौद्ध, सिक्ख आदि अन्यान्य सम्प्रदायवालों का भी प्रधान धर्म स्थान है। क्योंकि कोई ऐसा धर्म या सम्प्रदाय नहीं है जिसका प्रचार यहाँ किसी दिन चरम सीमा तक न पहुँचा हो और न कोई ऐसा समाज ही है, जिसमें जाति-हितैषी, पारदर्शी, तत्वज्ञानी, सिद्ध पुरुषों का आविर्भाव न हुआ हो। यही कारण है, कि प्रत्येक सम्प्रदाय के ग्रन्थों में इस महानगर के विषय में प्रचुर उल्लेख मिलते है। सभी समाज के विद्वानों ने इस नगर की वर्णना में कलम उठायी और अपने जन्म तथा पाण्डित्य को सफल बनाया है। सुदूर प्राचीन काल में यह नगर कुसुमपुर, पुष्पपुर और पाटलिपुत्र के नाम से विख्यात था; किन्तु इस समय केवल ***पाटलिपुत्र*** या ***पटना*** के नाम से ही प्रसिद्ध है। कोई-कोई कहते हैं, कि मुसलमानों के शासन-काल में इसका नाम अजिमाबाद भी था, किन्तु इसका विशेष प्रमाण नहीं मिलता। अतएव यह नगण्य है। वर्त्तमान समय में इस नगर का क्षेत्रफल ......१८ वर्ग मील और जन-संख्या १६५१९२ हैं। यह बिहार की राजधानी और व्यापार का स्थान है। यहाँ बहुत से इतिहास प्रसिद्ध प्राचीन दर्शनीय स्थान हैं, जिन्हें देखने के लिये बहुत दूर-दूर से लोग आते है।

पटना का निर्माण-काल — सुप्रसिद्ध पाटलिपुत्र (पटना) का निर्माण कब और किसने किया, यह ठीक-ठीक बतलाना कठिन ही नहीं, असम्भव भी है। क्योंकि कवि कालिदास ने अपने रघुवंश नामक महाकाव्य के छठे सर्ग के श्लोक २४वें में इन्दुमती के स्वयंबर की वर्णना में **अनेन चेदिच्छसिगृह्यमाणं पाणिं वरेण्येन कुरु प्रवेशे प्रासाद बातायन संश्रितानां नेत्रोत्सवं पुष्प पुराङ्नानाम्** पुष्पपुर के नाम से पटने का उल्लेख किया है। स्वयंबरा महारानी इन्दुमती का विवाह मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रजी के पितामह महाराजा अज के साथ हुआ था। इससे श्रीराम चन्द्रजी के शासन काल के पूर्व में पाटलिपुत्र का होना निश्चय है। इसके अतिरिक्त महाभाष्य में **'अनुशोणं पाटली पुत्रम्'** महाभारत में ***राजा नन्द की चाणक्य के द्वारा पराजित होने की भविष्यवाणी की हुई है। दण्डि ने अपने गद्यकाव्य के दशकुमार चरित्र में*** **'अस्ति मगध देश शेषरीभूताः पुष्पपुरी नाम नगरी'** विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस नामक नाटक में **'सखे विराधगुप्त वर्णयेदांनिं कुसुमपुरबृत्तान्तम्'** विष्णुशर्म्मा हितोप-देश नामक नीति-ग्रन्थ में **'अस्ति भागीरथीतीरे पाटलीपुत्रनामधेयं नगरम्'** आदि भिन्न-भिन्न ग्रन्थों में पटने का उल्लेख किया पाया जाता है। इससे समय का निश्चय करना असम्भव होते हुये भी यह निश्चित है, कि यह प्रसिद्ध नगर बहुत प्राचीन और परम पवित्र स्थान है। अस्तु जैन-शास्त्रानुसार पटने का निर्माण-काल श्रीमहावीर स्वामी के समकाल है। इस महानगर को मगधाधिपति राजा श्रेणिक के पौत्र राजा उदायी ने बसाया था। वैदिक शास्त्र (ब्रह्माण्ड पुराण अ० ११६ में) भी इस राजा का प्रमाण मिलता हैः- **उदायी भविता तस्मात् त्रयोविंश समानृपः। स वै पुरवरं राजा पृथिव्यां कुसुमाह्वयं गंगायः दक्षिणे कुले चतुस्त्रं करिष्यति।**

क्रमशः

अथर्ववेद का कश्मीरी संस्करण भारत पहुंचा

भारत की एक अत्यन्त प्राचीन धरोहर भारत के पास वापस अपने प्रतिरूप (सी.डी.रॉम) में लौट आई है। सन् १८७० में जर्मनी के प्रो. रूडोल्फ वान रोथ ने जम्मू-कश्मीर के तत्कालीन महाराजा से विश्व की दुर्लभतम पाण्डुलिपियों में से एक ***अथर्वेद का संशोधित कश्मीरी संस्करण*** प्राप्त किया था। गत ९ फरवरी, २००२ को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में सम्पन्न हुए एक कार्यक्रम में इस दुर्लभतम पाण्डुलिपि के १५४ ***सी.डी रॉम*** भारत में जर्मनी के राजदूत श्री हीमो रिचटर ने केन्द्र के अध्यक्ष डा. लक्ष्मी मल्ल सिंघवी को सौंपे। इस पाण्डुलिपि की मूलप्रति को जर्मनी के तुबिनगेन विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में सहेज कर रखा गया है। इस समय अथर्ववेद के मात्र दो संस्करण ही उपलब्ध हैं, पहला, संशोधित कश्मीरी संस्करण तथा दूसरा है शौनक संस्करण। इसलिए भोजपत्र पर शारदा लिपि में लिखी गई यह पाण्डुलिपि अत्यंत दुर्लभ है। कार्बन तिथि ९०० ईसा वर्ष पूर्व का यह प्राचीन ग्रंथ उस समय अस्तित्व में आया था जब ग्रीक की अपनी लिपि तक नहीं थी।

ई-टरनल्स. काम नामक लघुवर समवाय (साप्टवेयर कम्पनी) ने अथर्वेद की इस पाण्डुलिपि को १५४ ***सी. डी. रॉम*** में सहेजा है। ई-टरनल्स. काम का दावा है कि शुद्ध स्वर्ण तकनीक से बने इस सी.डी. रॉम में संकलित पाण्डुलिपि २०० वर्ष तक सुरक्षित रहेगी। इस अवसर पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सदस्य सचिव प्रो. एन. आर. शेट्टी, प्रो. लोकेशचन्द्र, ई-टरनल्स. काम के संस्थापक तथा निदेशक श्री गुन्थार्ड मूलर सहित अनेक गण्यमान्यजन उपस्थित थे।

साभार– पाच्चजन्य २४ मार्च २००२

डॉ० लक्ष्मीमल जी सिंघवी को स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए
श्री दिलीप सिंह जी नाहटा।

श्रीमती लता बोथरा की 'भारत में जैन धर्म' एवं प्रो. सत्यरंजन बनर्जी की 'Introducing Jainism' नामक पुस्तकों का लोकार्पण भूतपूर्व हाइकमिश्नर, ब्रिटेन तथा प्रख्यात विधिवेत्ता एवं सांसद श्री लक्ष्मीमल सिंघवी द्वारा दिनांक २२-०३-२००२ को कोलकाता में किया गया।

सहर्ष सूचित करते है कि जैन भवन के अन्तर्गत Jainology & Prakrit Research Intitute जिसकी स्थापना सन् १९९६ में बसन्त पंचमी के शुभ दिन आचार्य पद्म सागर सूरिश्वर जी महाराज की निश्रा में हुई थी, उसका विधिवत प्रारम्भ हो चुका है। पूर्वांचल में इस शोध केन्द्र के क्रियाकलापों, 'सारस्वत प्रयासो' विकासोन्मुख प्रवृति एवं संभाविता को देखकर प्रसिद्ध विधिवेत्ता, भूतपूर्व हाइकमिश्नर ब्रिटेन एवं सांसद डॉ० एल. एम. सिंघवी ने इस प्रतिष्ठान के संरक्षक पद को स्वीकार किया है।

'भारत में जैन धर्म' पुस्तक का लोकार्पण करते हुए डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी साथ में है श्री दिलीप सिंह नाहटा, श्री कमल सिंह रामपुरिया, श्रीमती लता बोथरा एवं श्रीमती माला बैद

श्री दिलीप सिंह जी नाहटा को जैनालोजी एण्ड प्राकृत रिसर्च संस्थान के संरक्षक पद को स्वीकृति करते हुए डॉ० लक्ष्मीमल जी सिंघवी, साथ में है श्रीमती लता बोथरा एवं श्रीमती माला बैद

तित्थयर

संवादपत्र रजिस्ट्रेशन (केन्द्रीय) विधि (१९५६) के ८ नम्बर धारा के अनुसार निवृत्ति :

प्रकाशन स्थान	:	कोलकाता
प्रकाशन अवधि	:	मासिक
मुद्रक का नाम	:	लता बोथरा (भारतीय)
ठिकाना	:	पी० २५, कलाकार स्ट्रीट कोलकाता – ७०० ००७
प्रकाशक का नाम	:	लता बोथरा (भारतीय)
ठिकाना	:	पी० २५, कलाकार स्ट्रीट कोलकाता – ७०० ००७
सम्पादक का नाम	:	लता बोथरा
ठिकाना	:	पी० २५, कलाकार स्ट्रीट कोलकाता – ७०० ००७
सत्वाधिकारी का नाम	:	जैन भवन
ठिकाना	:	पी० २५, कलाकार स्ट्रीट कोलकाता – ७०० ००७

मैं, लता बोथरा, घोषणा करती हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरे ज्ञान एवं विश्वासानुसार सत्य है।

लता बोथरा

१५/०४/२००२

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,(Resi) 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 247-6874, (Resi) 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Kolkata - 700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2208967, (Resi) 2471750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 455-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 226-2418, (Resi) 464-2783

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (Resi) 239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 238-8677/1647,239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 348-8576/0669/1242
(Resi) 225-5514, 237-8208, 229-1783

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 282-4649, (Resi) 247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata
Ph: 237-4132/236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (Resi) 238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 233-1766/238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Kolkata - 700 068
Ph: 472-0610

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203 /1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950 (Fact). 557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 229-5047, 9110

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021
Office: Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Kolkata -700 001, Ph: 220-2389/3570/3569

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Kolkata - 700 026
Phone : 476-1533

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 247-7880, 247-8663
(Res) 247-8128, 247-9546

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street Kolkata - 700 013
Ph: 244-4436

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 235-2076, 235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2296256/8730/1029
Resi: 247 6526/6638/2405126
Telex: 021 2333, ARBI IN, Fax : 226 0174

MANI DHARI TAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P.V.C. Insulated Wires and cables
JHANWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110 043, Ph: (O) 501-6527
(Resi) 545-3415, 542-3304
Mobile: 9811075330

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

H. R. ELECTRONICS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare Parts
Siemens, English Electric L.T./L.K.B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No -712A
South Block, Kolkata - 700 001
Room No.- 314, 3rd Floor
Phone : (O) 235 5009/1299, (R) 660-4332

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 230 0216, (R) 235 9657/9312

CHUNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 7764, (R) 666 4541, 530 9286

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Dealers of
J. K. Steel File. Drills. I. T. Drills. Tapes Center
BIPICO - ECLIPSE Hacksaw Bledes
"FREEMANS" GK Measuring Tapes, 18/C Sukeas Lane,
Kolkata - 700 001, Phone : 242-2345, 242-4461

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 232 6040, (R) 684181

JAI CHAND VINOD KUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 3328/9678, 239 3450
Fax : 239 3450, 247 7526
Telex : 217761 JVS-IN Grams MINNI-BROS

S. VINAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 238 1388 (R) 247 6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Kolkata - 700 007

BOTHRA SHIPPING SERVICES
2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Fax No. 220-6400 Ph: 220-7162
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 239-7607)

अangan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Phone : 359 2031, e-mail : www.jiggis.com

PRITAM ELECTRIC & ELECTRONIC PVT. LTD.
Shop No. G- 136, 22, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 236-2210

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007
Phone : 227-1857

RABINDRA SINGH NAHAR
40/4A, Chakraberia South, Kolkata - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Kolkata - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140
(Resi) 352-8387/9885

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 007
Phone : 220-4779/0131/5721

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)230-1329, 232-1033
Fax : 91-33-2302413

MANIK CHAND MANOJ KUMAR
11, Clive Row, 3rd Floor, Room No. 4,
Kolkata - 700 001, Phone : 242-4131/4756

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 236-3028, 237-4039

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Phone : 220-0874/9372/221-0246

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C.
Kolkata - 700 019
Phone : 287-0448

In
Loving Memory of their parents

Late, Shree Phool chandji Kharai
&
Late, Smt. Narangi Devi Kharai

From :-

M/s Phool Chand Kharai & Sons
21, Kali Krishna Tagore Street
Kolkata - 700 007
Phone : 233-1609, 239-8628

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL" 226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN 226-6283
226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 634-6441/644-6442
Fax: 6346287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

卐

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 514-4496, 513-1086, 513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 522-1580

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread).

Subhash Projects and Marketing Limited

MAN IN PARTNERSHIP WITH NATURE

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Calcutta-700016 Ph:(033)245-7562. Registered Office: Subhash House, F-27 2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020 Ph: (011) 692 7091-94. Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8 2 Lisor Road, Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15. Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metre, no less.

Building a floating pumping station on the fierce of Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproff Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point resposhsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

English :

1. Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:

Vol - 1	(satakas 1-2)	Price : Rs.	150.00
Vol - 2	(satakas 3-6)		150.00
Vol - 3	(satakas 7-8)		150.00
Vol - 4	(satakas 9-11)		150.00

2. James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates — Price : Rs. 100.00
   (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)
3. P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani. — Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord, — Price : Rs. 15.00
5. Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani — Price : Rs. 15.00
6. Ganesh Lalwani - Jainthology — Price : Rs. 100.00
7. Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains — Price : Rs. 100.00
8. Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India — Price : Rs. 100.00

Hindi :

1. Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 40.00
2. Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 20.00
3. Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 30.00
4. Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 50.00

5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Smt. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Smt. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti/ Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Bandyopadhyay Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Smt. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Smt. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Smt. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00

अहिंसा ही परमफल है, परममित्र है, परम सुख है।

अहिंसा कायरों का नहीं वीरों का अस्त्र है।

卐

arcadia shipping limited

We Own & Operator tramp service on
-M.V.ARCADIA PROGRESS (35224 DWT)
Besides Owing & Operating 8 Self Propeled + 1 Dumb Barges
of between 550-1250 DWT.

We are Associates/General Agents in India for:
Winco Maritime Limited, London
-Puyvast Chartering BV., The Netherlands
-National Petroleum Construction Co., Abu Dhabi

******

We are agents at Mangalore for:
The Shipping Corporation of India Ltd.
(The Indian National Line)

******

Regd. & head Office:
222, Tulsiani Chambers Nariman point,
Mumbai-400 021.
Tel: 2831540/49, 2020416/418/2822765.
Fax: 2872664.
Tlx: 86567 ASPL IN / 83059 CONT IN, / CABLE: SHIPONTIME
E.Mail: vns@arcadiashipping.com

******

Offices at all major Indian Ports & New Delhi & Bangalore.

Tech/W.B./R.N.P.-45/2002
Vol. XXVI No. 1 TITTHAYARA April 2002
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

आचार्य श्री कैलास सागर सूरि ज्ञान मन्दिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र,
कोबा, जि. गांधीनगर, पीन-३८२००९

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225